शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

देवनागरी लिपि के स्वीकार से भाषायी संघर्ष मिटेगा

डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मसौदे में हिंदी भाषा को अनिवार्य करने की बात पर देश में एक बार फिर भाषायी संघर्ष प्रारंभ हो गया है। दक्षिण भारत ने इसे लेकर तीव्र विरोध दर्ज कराया है। परिणामस्वरूप मानव संसाधन विकास मंत्रालय को अपनी ओर से स्पष्टीकरण जारी करना पड़ा कि यह अभी सिर्फ मसौदा है। इसे लागू करते समय हिंदी भाषा को अनिवार्य नहीं किया जाएगा। सभी को अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप त्रिभाषा सूत्र को अपनाने की स्वतंत्रता रहेगी। भारत में कुल मिलाकर 22 आधिकारिक भाषाएं हैं। यह भारत देश का वैभव ही है कि यहां इतनी अधिक भाषाएं हैं। लेकिन भाषावाद ने देश के सामने राष्ट्रीय एकता की चुनौती प्रस्तुत की है। भाषा के आधार पर गठित प्रांत अपने को अलग दिखाने के लिए एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। हरेक प्रान्त और हरेक व्यक्ति को अपनी भाषा से प्रेम और लगाव होना अनुचित नहीं है। लेकिन हमें यह बात भी नहीं भूलना चाहिए कि भाषा के आधार से दुनिया में बड़ेबड़े देश विभाजित हो गए। स्मरण कीजिये उस वक्त का जब भारत की सीमायें अफगानिस्तान तक जाती थी। उस समय और बहुत बाद तक भारत को सांस्कृतिक रूप से एक रखने में संस्कृत भाषा ने अपना अमूल्य योगदान दिया। इस भाषा में श्रेष्ठ आध्यात्मिक साहित्य की रचना की गयी। जिन संतों ने देश के विभिन्न प्रान्तों में जन्म लिया, उन्होंने अपने विचारों को देश के लोगों तक पहुँचाने के लिए संस्कृत भाषा सीखी। कभी पुरातन काल में बनारस में विद्वानों ने एकत्र होकर यह निर्णय लिया था कि भाषाएँ भले ही अलग-अलग हों, लेकिन लिपि देवनागरी होगी। इसलिए मराठी भाषा अलग होते हुए भी उसकी लिपि देवनागरी है। विज्ञान और तकनीक ने भाषा के बंधनों को बहुत हद तक ढीला कर दिया है। आगे जाकर भाषाओं को समझने में और आसानी होगी। इसलिए देश को जोड़ने का काम देवनागरी लिपि करेगी। आज देश के लोग अन्य प्रांत की भाषा सीखने के इच्छुक हैं, परन्तु उनके सीखने में लिपि बाधक हो जाती है। पहले लिपि सीखे फिर भाषा सीखे। यदि देवनागरी लिपि में भाषा आ जाती है तो समस्या हल हो जाती है। यद्यपि देवनागरी लिपि में भी सुधार की जरूरत है, लेकिन पहले देवनागरी लिपि का स्वीकार किया जाए तो सुधार करना आसान हो जाएगा। भाषा के साथ-साथ लिपि के आग्रह ने प्रश्न को जटिल बना दिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भाषा के स्थान पर देवनागरी लिपि पर जोर देना चाहिए। अनेक विद्वान भी आज हिंदी और देवनागरी लिपि को एक मान बैठे हैं। इस भ्रम का निरसन जरूरी है।

यदि अंगरेजी को भी रोमन की बजाय देवनागरी लिपि में लिखना प्रारंभ कर दिया जाये तो अंगरेजी का एक शुद्ध शब्दकोश तैयार हो सकता है। यह शब्दकोश देवनागरी लिपि के उच्चारण के अनुसार होगा न कि अंग्रेजी के अवैज्ञानिक उच्चारण के अनुसार। देश की भाषाओं में प्रचलित एक समान शब्दों का एक वृहत शब्दकोश बना लिया जाए, जिससे एक प्रांत से दूसरे प्रांत में जाने वाले भारतीय शब्दों से अनजान न रहें। भाषायी दीवार गिराने में देवनागरी लिपि न सिर्फ सहायता कर सकती है, बल्कि वह देश की एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।